पद ८२

(राग: बागेश्री बहार – ताल: एक्का)

सांब तुजविण मज रक्षि दुजा कोण असे रे।।ध्रु.।। येई कैलासवासी शशि भाळिं धारणा। त्रिपुरारि त्रिनयन त्रिविध तापहरणा। नंदिवाहन नागभूषण चर्मवसन जटामाजीं गंगा वसे रे।।१।। येई भस्मधार भद्रभाल भवविदारका। निजानंद स्वानंद नित्य निर्विकारका। हर हर हर गर्जित सुर सुमन अपार तुजवरी वर्षे रे ।।२।। येई पंचवदन परमपुरुष पार्वतीपती । दशकंठ वरद दशकर दैदिप्य फांकती। तारि तारि तारि भव हा निवारी। माणिक उद्धारी दास तुझा रे ।।३।।